tcsacademy

सामान्य अध्ययन*(General Studies)*

आधुनिक भारत

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी **updates** निरंतर पाने लिये निम्नलिखित पेज को **"Like"** करें

www.facebook.com/tcsacademy

www.twitter.com/@tcsacademy

इकाई–1

भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन
(Arrival of European Companies in India)

पुर्तगालियों का भारत आगमन *(Arrival of Portuguese in India)*

भारतीय इतिहास में व्यापार–वाणिज्य की शुरूआत हड़प्पा काल से मानी जाती है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, आर्थिक सम्पन्नता, आध्यात्मिक उपलब्धियां, दर्शन, कला आदि से प्रभावित होकर मध्यकाल में बहुत से व्यापारियों एंव यात्रियों का यहां आगमन हुआ। किंतु 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवंम् सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध के मध्य भारत में व्यापार के प्रारंभिक उद्देश्यों से प्रवेश करने वाली यूरोपीय कम्पनियों ने यहां की राजनितिक, आर्थिक तथा सामाजिक नियति को लगभग 350 वर्षो तक प्रभावित किया। इन विदेशी शक्तियों में पुर्तगाली प्रथम थे। इनके पश्चात् डच, अंग्रेज, डेनिस था फ्रांसिसी आयें। डचों के अंग्रेजों से पहले भारत आने के बावजूद ब्रिटिश ''ईस्ट इण्डिया कम्पनी'' की स्थापना डच ''ईस्ट इण्डिया कम्पनी'' से पहले हुयी।

यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कम्पनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। भारत के लिये नये समुद्री मार्ग की खोज पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा 17 मई 1498 को भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बन्दरगाह कालीकट पहुंच कर की। वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन (यह कालीकट के शासक की उपाधि थी।) द्वारा किया गया तत्कालीन भारतीय व्यापार पर अधिकार रखने वाले अरब व्यापारियों को जमोरिन का यह व्यवहार पसन्द नहीं आया, अतः उनके द्वारा पुर्तगालियों का विरोध किया गया।

इस प्रकार हम देखतें है कि पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एंव यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नयें युग का सूत्रपात हुआ। भारत आने और जाने में हुये यात्रा व्यय के बदले में वास्कोडिगामा ने करीब साठ गुना अधिक धन कमाया। जिसके बाद धीरे–धीरे पुर्तगालियों ने भारत आना प्रारम्भ कर दिया। भारत में कालीकट, गोवा, दमन, दीव एवं हुगली के बन्दरगाहो में पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना की। भारत में द्वितीय पुर्तगाली अभियान पैड्रो अल्वेरेज कैब्राल के नेतृत्व में सन् 1500 ईसवीं में छेड़ा गया। कैब्राल ने कालीकट, बन्दरगाह एक अरबी जहाज को पकड़कर जमोरिन को उपहार स्वरूप भेंट किया। 1502 ई0 में वास्कोडिगामा का पुनः भारत आगमन हुआ। भारत के प्रथम पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना 1503 ई0 में कोचीन में गयी तथा द्वितीय फैक्ट्री की स्थापना कन्नूर में 1505 ई0 में की गयी।

पुर्तगाल से प्रथम बायेसरायं के रूप में फ्रांसिस्को द अल्मेड़ा का भारत आगमन सन् 1505 ई0 में हुआ। यह 1509 ई0 तक भ्ज्ञारत में रहा। उससे पुर्तगाली सरकार की ओर से यह निर्देश दिया गया था कि वह भारत में ऐसे दुर्गो का निर्माण करे जिनका उद्देश्य सिर्फ सुरक्षा न होकर हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो। उसके द्वारा अपनायी गयी यह नीति ''नीले या शांत जल की नीति'' कहलाई। 1508 में अलमेड़ा संयुक्त मुस्लिम नौसैनिक बेड़े (मिश्र +तुर्की+गुजरात) के साथ चोल के युद्ध में पराजित हुआ। अगले वर्ष अर्थात् 1509 में अलमेड़ा ने इसी संयुक्त मुस्लिम बेड़े को पराजित किया। इसमें हिन्द महासागर में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने के लिये सामुद्रिक नीति को अधिक महत्व दिया।

सन् 1509 में भारत में अगले पुर्तगाली वायसंराय के रूप में अल्फासों द अल्बुकर्क का आगमन हुआ। इसे भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इसने कोचीन को अपना मुख्यालय बनाया। अल्बुकर्क ने 1510 ई0 में गोवा को बीजापुर के शासक युसुफ आदिल साह से छीनकर अपने अधिकार क्षेत्र में कर लिया। इसमें 1511 ई0 में दक्षिण पूर्व एशिया के महत्वपूर्ण मण्डी मल्लका तथा 1515 ई0 में फारस की खाड़ी में अवस्थित होरमुज पर अधिकार कर लिया। अल्बुकर्क पुर्तगाली पुरुषों को पुर्तगालियों की आबादी बढ़ाने के उद्देश्य से भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिये प्रोत्साहित किया तथा पुर्तगाली सत्ता एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में गोवा को स्थापित किया। यह वह समय था जब पुर्तगालियों ने प्रत्यक्ष रूप से भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारंम्भ कर दिया था।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

नीनो–डी–कुन्हा अगला प्रमुख पुर्तगाली गवर्नर था। इसका प्रमुख कार्य गोवा को पुर्तगालियों की औपचारिक राजधानी (1530 ई0) के रूप मे परिवर्तित करना था 1530 ई. में कान्हा ने सरकारी कार्यालय कोचीन से गोवा स्थानान्तरित कर दिया। कुन्हा ने हुगली (बंगाल) और सेन्थोमा (मद्रास के निकट) में पुर्तगाली बस्तियों को स्थापित किया एवं 1534 ई. में बेसीन तथा 1535 ई. में दीव पर अधिकार कर लिया। बेसीन के प्रश्न पर उसने गुजरात के शासक बहादुरशाह से युद्ध किया। इसमें बहादुरशाह की पराजय हुई तथा समुद्र में डूब जाने से उसकी मृत्यु हो गई।

पश्चिम भारत के बंधई, चौल, दीव, सालसेट एवं बेसीन नामक क्षेत्र पर पुर्तगाली वायसराय जोवा–डी–कैस्ट्रो द्वारा नियंत्रण स्थापित किया गया। भरत में प्रथम पादरी फ्रांसिस्को जेवियर का आगमन अन्य पुर्तगाली गवर्नर अल्फांसो डिसूजा (1542–1545 ई.) के समय हुआ।

पुर्तगाली एशियाई देशों से व्यापार के लिये भारत में अवस्थित नागट्टनम बंदरगाह का प्रयोग करते थे। वे कोरोमण्डल तट के मसुलीपट्टनम और पुलिकट शहरों से वस्त्रों को एकत्रित कर उनका निर्यात करते थे। पुर्तगाली चटगांव (बंगाल) के बंदरगाह की 'महान बंदरगाह' की संज्ञा देते थे।

पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर से होने वाले आयात–निर्यात पर एकाधिकार स्थापित कर लिया था। उन्होनें यहां कॉर्ट्ज–आर्मेडा काफिला पद्धति का प्रयोग किया जिसके अन्तर्गत हिन्द महासागर का प्रयोग करने वाले प्रत्येक जहाज को शुल्क अदा करना होता था। पुर्तगालियों ने बिना परमिट के भारतीय एंव अरबी जहाजों को अरब सागर में प्रवेश करने से सर्जित कर दिया। पुर्तगालियों ने शुल्क लेकर छोटे स्थानीय व्यापारियों के जहाजों को संरक्षण प्रदान किया। जिन जहाजों को परमिट प्राप्त होता था। उन्हें गोला बारूद और काली मिर्च का व्यापार करने की अनुमति नहीं थी। मुगल सम्राट अकबर को भी पुर्तगालियों से काटॅर्ज (परमिट) लेना पड़ा। मुगल शासक अकबर ने दरबार में दो पुर्तगाली ईसाई पादरियों मॉगन्सरेट तथा फादर एकाबिवा का आगमन हुआ। शाहजहाँ ने 1632 ई. में हुगली को पुर्तगालियों के अधिकार क्षेत्र से छीन लिया। तत्पश्चात् औरंगजेब ने सन् 1686 ई. में चटगांव से समुद्री लुटेरों का सफाया कर दिया।

भारत में तम्बाकू की खेती जहाज निर्माण, (कालीकट एंव गुजरात) तथा प्रिन्टिंग प्रेस की शुरूआत पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात् हुयी। पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 ई0 में गोवा में प्रथम प्रिन्टिंग प्रेस की स्थापना की। भारत में गोथिक स्थापत्य कला पुर्तगालियों की ही देन है।

18वीं सदी की शुरूआत तक भारतीय व्यापार के क्षेत्र में पुर्तगालियों का प्रभाव कम हो गया था। यद्यपि पुर्तगालियों ने भारत में सर्वप्रथम प्रवेश किया, किन्तु उनकी धार्मिक असहिष्णुता की नीति बर्बरतापूर्ण समुंद्री लूटपाट की नीति अल्बुकर्क के आयोग्य उत्तराधिकारी, अंग्रेजी तथा डच शक्तियों का विरोध, विजय नगर सम्राज्य का पतन तथा स्पेन द्वारा पुर्तगाल की स्वतंत्रता का कल्याण इत्यादि अनेक कारणों से भारतीय व्यापार के क्षेत्र से उनका पतन हो गया है।

भारत में डचों का आगमन (*Arrival of the Dutch in India*)

पुर्तगालियों के पश्चात् डच भारत आये। ये नीदरलैण्ड या हॉलैण्ड के निवासी थे। डचों की नीयत दक्षिण–पूर्व एशिया के मसाला बाज़ारों में सीधा प्रवेश कर नियंत्रण स्थापित करने की थी। 1596 ई0 में कारनेलिस डि हाउटमैन भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक था। डचों ने सन् 1602 ई. में एक विशाल व्यापारिक कम्पनी की स्थापना 'यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैण्ड' के नाम से की। इसका गठन विभिन्न व्यापारिक कम्पनियों को मिलाकर किया गया था। इसका वास्तविक 'वेरिगंदे ओस्टइण्डिशे कम्पनी' था।

डचों ने पुर्तगालियों से संघर्ष कर उनकी शक्ति को क्षीण कर दिया तथा भारत के सभी महत्वपूर्ण मसाला उत्पादन के क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया। डचों ने गुजरात, बंगाल, बिहार एंव उड़ीसा में अपनी

विदेशी कंपनियाँ

कंपनी		स्थापना वर्ष
• एस्तादो द इंडिया	:	1498
• (पुर्तगाली कंपनी)		
• वोरिंगिदे ओस्त इण्डिशे कंपनी	:	1602
• (डच ईस्ट इंडिया कंपनी)	:	
• ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी	:	1600 (1599)
• डेन ईस्ट इंडिया कपंनी	:	1616
• कम्पने देस इण्देस ओरियंतलेस	:	1664
• (फ्राँसीसी कंपनी)		

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

व्यापारिक कोठियों की स्थापना की। भारत में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना मसुलीपट्टनम में सन् 1605 ई. में हुई। इसके अतिरिक्त डचों द्वारा स्थापित अन्य महत्वपूर्ण फैक्ट्रियां पुलिकट, सूरत, चिन्सुरा, विमलीपट्टनम, कासिम बाजार, पटना, बालासोर, नागपट्टनम तथा कोचीन में अवस्थित थीं। बंगाल में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना पीपली में सन् 1627 ई. में की गई। भारत से डच व्यापारियों ने मुख्यतः मसालों, नील, कच्चे रेशम, शीशा, चावल व अफीम का व्यापार किया। डचों द्वारा मसालों के निर्यात के स्थान पर कपड़ों को प्राथमिकता दी गई। ये कपड़े कोरोमंडल तट एवं गुजरात से निर्यात किये जाते थे। भारत को भारतीय वस्त्रों के निर्यात का केन्द्र बनाने का श्रेय डचों को जाता है।

1759 ई. में 'बेदरा के युद्ध' (बंगाल) में अंग्रेजों द्वारा हुई पराजय के उपरांत भारत में अंतिम रूप से डचों का पतन हो गया। ''बेदरा के युद्ध' में अंग्रेजी, सेना का नेतृत्व क्लाइव द्वारा किया गया। अंग्रेजों की तुलना में नौ–सैनिक शक्ति का कमजोर होना, अत्यधिक केन्द्रीकरण की नीति, बिगड़ी हुई आर्थिक स्थिति, मसालों के द्वीपों पर अत्यधिक ध्यान देनो आदि को डचों के पतन के कारणों में गिना जाता है। डचों की व्यापारिक व्यवस्था का उल्लेखा 1722 ई. के दस्तावेजों में मिलता है। यह कार्टेल अर्थात् सहकारिता पर आधारित व्यवस्था थी।

डच कम्पनी ने लगभग 200 वर्षो तक अपने साझेदारों को जितना लाभांश दिया। (18प्रतिशत) वह वाणिज्य के इतिहास में एक रिकार्ड माना जाता है।

अंग्रेजों का भारत आगमन *(Arrival of the British in India)*

1599 ई. में कुछ अंग्रेज व्यापारियों द्वारा पूर्वी देशों से व्यापार करने के उद्देश्य से 'गवर्नर ऑफ कंपनी एण्ड मर्चेन्ट ऑफ लंदन ट्रेडिंग टू द ईस्अ इंडीज' नामक कंपनी की स्थापना की गई। इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने 31 दिसम्बर, 1600 ई. को एक रॉयल चार्टर जारी कर इस कपंनी को 15 वर्ष के लिये पूर्वी देशों से व्यापार करने का एकाधिकार पत्र दे दिया। उस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी में कुल 217 साझीदार थे। ईस्ट इंडिया कम्पनी में इसकी प्रतिद्वन्दी कम्पनी 'न्यू कंपनी' का सन् 1708 ई. में विलय हो गय जिसके फलस्वरूप 'द यूनाईटेड कम्पनी ऑफ मर्चेट्स ऑफ इंग्लैण्ड ट्रेडिंग टू द ईस्ट इंडीज' की स्थापना हुई।

यूरोपीय व्यापारिक कंपनी से संबद्ध व्यक्ति

• वास्कोडिगामा	:	भारत आने वाला प्रथम यूरोपीय यात्री।
• पेड्रो अल्वरेज कैब्राल	:	भारत आने वाला द्वितीय पुर्तगाली।
• फ्रांसिस्को डि अल्मेडा	:	भारत का प्रथम पुर्तगाली गवर्नर।
• जॉन मिल्डेनहाल	:	भारत आने वाला प्रथम पुर्तगाली गवर्नर।
• कैप्टन हॉकिन्स	:	प्रथम अंग्रेज वाला दूत जिसने सम्राट जहांगीर से भेंट की।
• जैरॉल्ड ऑन्गियार	:	बम्बई का संस्थापक।
• जॉब चॉरनाक	:	कलकत्ता का संस्थापक।
• चार्ल्स आयर	:	फोर्ट विलियम का प्रथम प्रशासक।
• विलियम नॉरिस	:	1638 में स्थाति नई ब्रिटिश कपंनी 'ट्रेडिंग इन द ईस्ट' का दूत जो व्यापारिक विशेषाधिकार हेतु औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुआ।
• फ्रैंकोइस मार्टिन	:	पाण्डिचेरी का प्रथम फ्राँसीसी गवर्नर।
• फ्राँसिंस डे	:	मद्रास का संस्थापक।
• शोभा सिंह	:	वर्धमान का जमींदार, जिसने 1690 में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह।
• इब्राहिम खां	:	कालीकाता, गोविन्दुर तथा सुतानती का जमींदार।
• जॉन सुरमन	:	मुगल सम्राट फर्रुखसियर से विशेष व्यापारिक सुविधा प्राप्त करने वाले शिष्टमंडल का मुखिया।
• फादर मॉन्सरेट	:	अकबर के दरबार में पहुचने वाले प्रथम शिष्टमंडल का अध्यक्ष।
• कैरोन फ्रैंक	:	इसने भारत में प्रथम फ्राँसीसी फैक्ट्री की सूरत में स्थापना की।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

1608 ई. में ब्रिटेन के साम्राज्य जेम्स प्रथम ने भारत में व्यापारिक कोठियों को खोलने के उद्देश्य से कैप्टन हॉकिन्स को पने राजदूत के रूप में मुगल सम्राट जहांगीर के दरबार में भेजा। हॉकिन्स ने मुगल सम्राट जंहागीर से फारसी में बात की। वह तुर्की एवं फारसी भाषाओं का अच्छा ज्ञाता था। हॉकिन्स वह प्रथम अंग्रेज था जिसने भारत की भूमि में प्रवेश समुद्र के रास्ते किया था। हॉकिन्स ने सन् 1609 ई0 मुगलबादशाह जंहागीर से अजमेर में मिलकर सूरत में बसने की आज्ञा मांगी। सूरत के स्थानीय व्यापारियों एवं पुर्तगालियों द्वारा इसका विरोध किया गया। परिणामस्वरूप उसे स्वीकृति नहीं मिली। 1611 ई0 में मुगल बादशाह जहांगरी कैप्टन मिडल्टन के द्वारा स्वालल्ली ने पुर्तगालियो के जहाजी बेड़े को पराजित किये जाने से अत्यधिक प्रभाव हुआ। जहांगीर ने 1613 ई0 में सूरत में अंग्रेजों को स्थायी कारखाना स्थापित करने की अनुमति प्रदान की।

जहांगीर के दरबार में सन् 1615 में सम्राट जेम्स प्रथम का दूत सर टॉमस रो पहुचा। जिसने मुगल सम्राज्य के सभी भांगो में व्यापार करने एंव फैक्ट्रिया स्थापित करने का अधिकार पत्र (शाही फरमान) प्राप्त कर लिया। परिणामस्वरू, अंग्रेजों ने आगरा, अहमदाबाद तथा भरूच में अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना की।

सन् 1611 ई0 में अंग्रेजों द्वारा व्यापारिक कोठी की स्थापना मसुलीपट्टनम की गयी। तत्तपश्चात् 1639 ई0 में मद्रास तथा 1651 ई0 में हुगली में व्यापारिक कोठिया खोली गयी। पूर्वी भारत में अंग्रेजो द्वारा स्थापित प्रथम कारखाने 1633 ई0 में उड़ीसा के बालासोर में खोला गया। इसके पश्चात् अंग्रेजों ने बंगाल तथा बिहार में भी अपने कारखाने खोले। 1661 ई0 में इंग्लैण्ड के सम्राट चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से हुआ। इस विवाह में बम्बई को दहेज के रूप में चार्ल्स को भेट कर दिया गया जिसे उन्होनें 10 पाउण्ड के वार्षिक किराये पर कम्पनी को दे दिया। अंग्रेजों ने 1639 ई0 में मद्रास में जमीन को पट्टे पर लेकर कारखाने की स्थापना की, इसके साथ ही कारखानें की किले बन्दी भी की गयी। इसे 'फोर्ट सेंट जार्ज' का नाम दिया गया।

अंग्रेजो ने धीरे–धीरे मुगल राजनीति में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया। 1686 ई0 में अंग्रेजो ने हुगली को लूट लिया, परिणामस्वरूप उनका मुगल सेनाओं से संघर्ष हुआ। इस युद्व के बाद कंपनी को सूरत, मसुलीपट्टनम तथा विशाखापट्टनम इत्यादि कारखानों से अपने अधिकार खोने पड़े, किन्तु अंग्रेजों द्वारा माफी मांगने के पश्चात् औरेंगजेब ने डेढ़ लाख रूपये का हरजाना लेकर इन्हे पुनः व्यापार करने का अधिकार प्रदान कर दिया। 1691 ई0 में जारी एक शाही फरमान के द्वारा तीन हजार रूपये के निश्चित वार्षिक दर के बदले कम्पनी को सीमा शुल्क से छूट दे दी गयी। कम्पनी ने 1698 ई0 में 12000 रूपये का भुगतान कर तीन गांवो–सुतानती, कालीकाता एंव गोविन्दपुर की जमींदार प्राप्त कर ली तथा फोर्टविलियम नामक किले का निर्माण किया। कालान्तर में जार्ज चॉरनाक के प्रयासो से उसी स्थान पर कलकत्ता नगर की नींव पड़ी।

1717 ई0 में मुगल सम्राट फर्रूखसिया का सफल इलाज कम्पनी के एक डाक्टर विलियम हेमिल्टन द्वारा किये जाने से फर्रूखसिया ने कम्पनी को व्यापारिक सुविधाओं वाला एक फरमान जारी किया। फरमान के अन्तर्गत कम्पनी को बंगाल में तीन हजार रूपये वार्षिक के बदले व्यापार करने आस–पास की भूमि किराये पर लेने, सूरत में 100000 रूपये वार्षिक के बदले निशुल्क व्यापार करने तथा बम्बई के टॅकसाल से जारी सिक्को को मुगल साम्राज्य में मान्यता दिलाने सम्बन्धी अधिकार प्राप्त हो गये। इतिहासकार ओर्म्स ने इस फरमान को कम्पनी का 'महाधिकार' (मैग्नाकाल्टा) कहा है।

भारत में फ्रांसीसियों का आगमन (*Arrival of the French in India*)

फ्रांसीसियों ने भारत में अन्य यूरोपीय कम्पनियों की तुलना में सबसे बाद में प्रवेश किया। भारत में पुर्तगाली, डच, अंग्रेज तथा डेन लोगो ने इनसे पहले अपने व्यापारिक कोठियों की स्थापना कर दी थी। सन् 1664 ई0 में फ्रांस के सम्राट लुई 14वें के समय उनके मंत्री कोबर्ट प्रयासों से फ्रांसीसी व्यापारिक कम्पनी 'कंपनी द इन ओरिएण्टल' (कंपनी देस इण्डस ओरिएण्टोल्स) की स्थापना हुई। इस कम्पनी का निर्माण फ्रांस की सरकार द्वारा किया गया था, तथा इसका सारा खर्च सरकार ही वहन करती थी। इससे सरकारी व्यापारिक कम्पनी भी कहा जाता था क्योंकि यह कंपनी भी सरकार द्वारा संरक्षित थी। व सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी।

सूरत में 1668 ई0 में फ्रांसीसियों की प्रथम कोठी की स्थापना फ्रैंक कैरो द्वारा की गयी। फ्रांसीसियों द्वारा दूसरी व्यापारिक कोठी की स्थापना गोलकुंडा रियासत के सुल्तान से अधिकार–पत्र करने के पश्चात् सन् 1669 ई0 में मसुलीपट्टनम में की गयी। 'पाण्डेचेरी' की नींव फ्रेंडोइस मार्टिन द्वार सन् 1673 ई0 में डाली गयी। बंगाल के नवाब शाइस्ता खाँ ने फ्रांसीसियों को एक जगह किराये प दी। जहां चन्द्रनगर की सुप्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गई। डचों ने 1693 ई0 में पाण्डिचेरी को फ्रांसीसियों के नियंत्रण से छीन लिया, किन्तु 1697 ई0 के रिजविक

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

समझौते के अनुसार उसे वापस कर दिया। फ्राँसीसियों द्वारा 1721 ई. में मॉरिशस, 1725 ई. में चाहे (मालाबार तट) एवं 1739 में कराइकल पर अधिकार कर लिया गया। 17472 ई. के पश्चात् व्यापारिक लाभ कमाने के साथ–साथ फ्राँसीसियों की राजनीतिक महत्वकांक्षायें भी जागृत हो गई। परिणामस्वरूप अंग्रेजों और फ्राँसीसियों के बीच युद्ध छिड़ गया। इन युद्धों को 'कर्नाटक युद्ध' के नाम से जाना जाता है।

भारत में उस समय कर्नाटक का यह क्षेत्र कोरोमण्डल तट र अवस्थित था। लगभग 20 वर्षे तक दोनों कम्पनियों के मध्य संघर्ष चला जिसका विवरण निम्नवत् है–

अंग्रेजों तथा फ्राँसीसी व्यापारिक कंपनियों के मध्य संघर्ष
(Wars between the British and the French Trade Companies)

प्रथम कर्नाटक युद्ध, 1746–1748 : इस युद्ध को पृष्ठभूमि में यूरोप में दोनों शक्तियों के मध्य लड़ा गया आँस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध था। 1746 ई. में भारत में हुआ यह युद्ध मात्र उसका विस्तार था। यूरोप में फ्राँस तथा ब्रिटेन एक–दूसरे के विरोधी थे जिसका प्रभाव भारत में भी पड़ा। फ्राँसीसी गवर्नर डूप्ले युद्ध के पक्ष में नहीं था। उसके द्वारा अंग्रेज अधिकारियों से बात करने के बाद भी कोई समाधान नहीं निकल पाया।

प्रथम कर्नाटक युद्ध प्रारंम्भ होने का तात्कालिक कारण एक अंग्रेज अधिकारी कैप्टन बर्नेट द्वारा कुछ फ्राँसीसी जहाजों पर कब्जा कर लेना था। डूप्ले ने मॉरिशस के फ्राँसीसी गवर्नर ला बूर्दने की सहायता से मद्रास को घेर लिया। अंग्रेजी गवर्नर मोर्श ने 21 सितम्बर, 1746 ई. को आत्मसमर्पण कर दिया। किन्तु डुप्ले का रणनीतिक लक्ष्य 'फोर्ट सैन डेविस' को जीतना था। लेकिन वह इसे जीत पाने में असफल रहा। भारत में फ्राँसीसियों के समक्ष अंग्रेज इस समय बिल्कुल असहाय थे। इसी समय 'सेन्ट टाम' नाम एक और युद्ध फ्राँसीसी सेना और कर्नाटक के नवाब अनवरद्दान के बीच लड़ा गया। इस युद्ध में फ्राँसीसी विजयी रहे।

महत्वपूर्ण तिथियां

1498 : वास्कोडिगामा का भारत आगमन।
1500 : द्वितीय पुर्तगाली यात्री कैब्राल का भारत आगमन।
1502 : दूसरी बार वास्कोडिगामा का भारत आगमन।
1510 : गोवा पर पुर्तगालियों का अधिकार।
1530 : कोचीन की जगह पोवा पुर्तगालियों की राजधानी बनी।
1599 : ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।
1602 : डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।
1661 : पुर्तगालियों ने ब्रिटेन के राजा को बम्बई दहेज में दिया।
1664 : फ्राँसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।
1690 : जॉब चॉरनाक द्वारा कलकत्ता की स्थापना।
1708–09 : ब्रिटेन की दो प्रतिद्वंदी कंपनियों का आपस में विलय।
पराजित कर भारतीय व्यापार से बाहर कर दिया।
1760 : वांडिवाश का निर्णायक युद्ध जिसमें अंग्रेंजों ने फ्राँसीसियों को पराजित कर भारतीय व्यापार से बाहर किया।

प्रथम कर्नाटक युद्ध का अंत 1748 ई. में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति के पश्चात् हुई 'आक्सा–ला–शैपेल' की संधि से हुआ। इस संधि की शर्तो के अनुसार मद्रास अंग्रेजों को वापस कर दिया गया।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध, 1749–1754 : कर्नाटक का द्वितीय युद्ध हैदराबाद तथा कर्नाटक के विवादास्पद उत्तराधिकारियों के कारण हुआ। डूप्ले की राजनीतिक महत्वाकांक्षायें कर्नाटक के प्रथम युद्ध की सफलता के पश्चात् बढ़ने लगी थी। भारत में ब्रिटेन और फ्राँस की कंपनियों ने एक– दूसरे के विरोधी गुटों को अपना समर्थन देकर आग में घी डालने का काम किया। डूप्ले ने नवाब पद के लिये चन्दा साहब को समर्थन दिया तथा दक्कन की सूबेदारी के लिये मुज़फ्फरजंग का समर्थन किया। अंग्रेजों ने इनके प्रतिद्वन्दियों अनवरूद्दीन एंव नासिरजंग को अपना समर्थन दिया। 1749 ई. में अंबूर में चंदा साहब ने अनवरूद्दीन को पराजित कर मार डाला तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों र अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। वहीं दूसरी ओर दक्कन की सूबेदारी हेतु लड़े गये युद्ध में मुज़फ्फरजंग अने भाई नासिरजंग से पराजित हो गया। मुज़फ्फरजंग अपने भाई नासिरजंग की मृत्यु के पश्चात् 1750 ई. में दक्कन का सूबेदार बन गया। 1751 ई. में इसी युद्ध के दौरान क्लाइव द्वारा अर्काट का घेरा डाला गया जो क्लाइव की प्रथम कूटनीतिक विजय मी जाती है।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

इस युद्ध का विस्तार से विवेचन न करते हुये यह कहना ही पर्याप्त होगा कि इस युद्ध में फ्राँस तथा फ्राँसीसी गवर्नर डूप्ले को अपूरणीय क्षति हुई। फ्राँसीसी सरकार ने डूप्ले को वापस बुला लिया तथा गोडेहू को अगला गवर्नर बनाकर भेजा। गोडेहू के प्रयासों से अग्रेजी कंपनी के साथ जनवरी 1754 ई. में 'पांडिचेरी की संधि' हुई जिसके तहत दोनों पक्ष युद्ध विराम पर सहमत हुये। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यह युद्ध अंग्रेजों के पक्ष में रहा।

तृतीय कर्नाटक युद्ध : यह युद्ध 1756 ई. में यूरोप के ऑस्ट्रिया और प्रशा में शुरू हुये सप्तवर्षीय युद्ध का ही विस्तार था। फ्राँस ने ऑस्ट्रिया तथा इंग्लैण्ड ने प्रशा को समर्थन देनो आरंभ कर दिया, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव भारत में उपस्थित दोनों शक्तियों के सम्बन्धों पर पड़ा। तात्कालिक कारण फ्राँस की सरकार द्वारा काउंट डि लाली को भारत के संपूर्ण फ्राँसीसी क्षेत्र के सैनिक एवं असैनिक अधिकारों को प्रदान किया जाना था। दूसरी ओर, अंगेजो, द्वारा बंगाल पर नियंत्रण स्थापित कर लेने के फलस्वरू उनकी आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत हो गयी थी। जिसके बल पर उन्होनें दक्कन को जीत लिया।

1758 ई. में लाली ने फोर्ट सेन्ट डेविस र नियंत्रण स्थापित कर लिया किंतु तंजौर पर अधिकार करने का उसका सपना पूरा नहीं हो पाया। इससे फ्राँस एंव लाली की व्यक्तिगत छवि पर बुरा असर पड़ा। लाली ने युद्ध में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिये बुस्सी को हैदराबाद से वापस बुला लिया। यह एक बहुत बड़ी भूल साबित हुई। 1760 ई. में अंग्रेजों ने सर आयर कूट के नेतृत्व में वांडिवाश के युद्ध में फ्राँसीसियों को हरा दिया। अंग्रेजों ने बुस्सी को कंद कर लिया तथा 1761 ई. में पांडिचेरी पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के बाद माही एंव जिन्जी पर भी उन्होनें कब्जा कर लिया। तृतीय कर्नाटक युद्ध का अंत सन् 1763 ई. में 'पेरिस की संधि' से हुआ। इस संधि की शर्तों के अनुसार अंग्रेजों ने चंद्रनगर के अतिरिक्त अन्य सभी फ्राँसीसी प्रदेश, जो उस समय उनके नियंत्रण में थे, फ्राँस को वापस कर दिये।

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. फ्राँसिस्को द अल्मेडा निम्नलिखित में किस यूरोपीय कपंनी के प्रथम वायसराय के रूप में भारत आया था?
   क. फ्राँसीसी
   ख. डच
   ग. पुर्तगाली
   घ. ब्रिटिश

2. भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है :
   क. अल्बुकर्क को
   ख. नीनो–डी–कुन्हा को
   ग. फ्राँसीसिस्कों द अल्मेडा को
   घ. फ्राँसीसिस्को जेवियर को

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
   क. कैप्टन हॉकिन्स ब्रिटेन पर राजदूत के रूप में मुगल सम्राट शाहजहाँ के दरबार में भारत आया था।
   ख. अंग्रेजों ने दक्षिण भारत में अपनी पहली व्यापारिक कोठी मसुलीपट्टनम में स्थापित की थी।
   ग. फोर्ट सेंट जॉर्ज का निर्माण पांडिचेरी में किया गया था।
   उपरोक्त में से कौन–सा/से कथन सही है/हैं?
   अ. केवल क
   ब. केवल ख
   स. केवल क और ग
   द. क, ख, और ग

4. निम्नलिखित में से किस मुगल शासक ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापारिक सुविधाओं वाला एक फरमान जारी किया था?
   क. औरंगजेब
   ख. शाहजहाँ
   ग. फर्रूखशियर
   घ. बहादुरशाह प्रथम

5. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सही है?
   क. डच कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी और वह सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर थी।
   ख.पुर्तगालियों ने आयात–निर्यात पर नियंत्रण स्थापित करने के लिये कार्ट्ज पद्धति का प्रयोग किया था।
   ग. भारत में गोथिक स्थापत्य कला अंग्रेजों की देन है।
   घ. उपरोक्त सभी।

TIMES IAS

6. भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
   क. औपनिवेशिक विस्तार करना।
   ख. पूरब की संस्कृति से परिचित होना।
   ग. व्यापार करना।
   घ. भारत के साथ राजनीतिक संबंध स्थापित करना।

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः
   क. अल्बुकर्क ने पुर्तगाली पुरूषों को भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिये प्रोत्साहित किया था।
   ख. बेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को पराजित किया था।
उपरोक्त में से कौन–सा/से कथन सही है/हैं?
   अ. केवल क
   ब. केवल ख
   स. केवल क और ख
   द. न तो क और न ही ख

8. भारत को भारतीय वस्त्रों के निर्यात का केन्द्र बनाने का श्रेय किस यूरोपीय कंपनी को दिया जाता है?
   क. ब्रिटिश ख. डच
   ग. पुर्तगाली घ. फ्रॅांसिसी

9. भारत में पुर्तगालियों के व्यापार क्षेत्र में पतन के निम्नलिखित में से कौन–से कारक थे?
क. अंग्रेजी तथा डच शक्तियों का विरोध
ख. धार्मिक असहिष्णुता की नीति।
ग. समुद्री लूटपाट की नीति।
कूट :
   अ. केवल क और ख ब. केवल ख और ग
   स. केवल क और ग द. क, ख, और ग

10. सूची–1 को सूची–2 के साथ सुमेलित कीजिये :–

	सूची 1	सूची–2
क.	फ्रॅांसिस डे	क. मद्रास का संस्थापक
ख.	जॉब चॉरनाक	ख. कलकत्ता का संस्थापक
ग.	जैरॉल्ड आन्गियार	ग. बंबई का संस्थापक

कूट :

	क	ख	ग
अ.	1	2	3
ब.	1	3	2
स.	2	1	3
द.	2	3	1

11. 1746–48 के मध्य प्रथम कर्नाटक युद्ध किन दो यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के मध्य हुआ था?
   क. डच एंव अंग्रेज
   ख. अंग्रेज एवं फ्रॅांसीसी
   ग. अंग्रेज एवं पुर्तगाली
   घ. पुर्तगाली एंव डच

12. अंग्रेजों ने निम्नलिखित में से किसके नेतृत्व में वांडिवाश के युद्ध में फ्रॅांसिसियों को हराया था?
   क. गोडेहू ख. काउंट दी लाली
   ग. आयर कूट घ. ला बूर्दने

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
   क. 1498 ई. में वास्कोडिगामा भारत के पश्चिमी तट पर कालीकट पहुंचा था।
   ख. भारत में सर्वप्रथम पुर्तगाली यूरोपीय कंपनी का आगमन हुआ था।
   ग. भारत में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना मसुलीपट्टनम में हुई थी।
   घ. ईसाई पादरी मॉन्सरेट तथा फादर एक्वाविबा का भारत आगमन मुगल शासक अकबर के दरबार में हुआ था।
उपरोक्त में से कौन–सा/से कथन सही है/हैं?
   अ. केवल क, ख ओर ग
   ब. केवल ख, ग और घ
   स. केवल क और घ
   द. क, ख, ग, और घ

14. द्वितीय कर्नाटक युद्ध का कारण निम्नलिखित में से क्या था?
   क. फ्रॅांसीसी तथा ब्रिटिश कपंनियों द्वारा क्रमशः हैदराबाद और कर्नाटक के विवादास्पद उत्तराधिकारियों को समर्थन देना।
   ख. ऑस्ट्रिया और प्रशा के बीच सप्तवर्षीय युद्ध।
   ग. ऑस्ट्रिया में उत्तराधिकार का युद्ध।
   घ. इनमें से कोई नहीं।

15. प्रथम कर्नाटक युद्ध के बाद हुये 'आक्सा–ला–शैपेल' की संधि के बाद निम्नलिखित में से कौन–सा क्षेत्र अंग्रेजों को वापस कर दिया गया?
   क. पांडिचेरी ख. मद्रास
   ग. बंबई घ. कलकत्ता

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

16. फ्राँसीसी सरकार ने निम्नलिखित में से किस कारण डूप्ले को वापस बुला लिया था?
    अ. डूप्ले की भ्रष्ट नीति के कारण।
    ब. द्वितीय कर्नाटक युद्ध में डूप्ले की हार के कारण।
    स. डूप्ले द्वारा चंद्रनगर पर कब्जा न कर पाने के कारण।
    द. मुगल शासन के साथ समन्वय न कर पाने के कारण।

17. अंग्रेजों को निम्नलिखित में से किस मुगल शासक के शासनकाल से सूरत, मसुलीट्टनम तथा विशाखापट्टनम के कारखानों से अपने अधिकार खोने पड़े थे?
    क. शाहजहाँ
    ख. जहाँगीर
    ग. औरंगजेब
    घ. अकबर द्वितीय

18. तृतीय कर्नाटक युद्ध का तात्कालिक कारण था :
    क. ऑस्ट्रिया और प्रशा में शुरू हुआ सप्तवर्षीय युद्ध।
    ख. फ्राँस की सरकार द्वारा काउंट डि लाली को भारत के संपूर्ण फ्राँसीसी क्षेत्र के सैन्य–असैन्य अधिकार देना।
    ग. गोडेहू द्वारा पांडिचेरी की संधि कर लेना।
    घ. अंग्रेजों द्वारा चंद्रनगर के अतिरिक्त अन्य सभी फ्राँसीसी प्रदेश फ्राँस को वापस कर देना।

19. निम्नलिखित में से कौन भारत में पुर्तगालियों की उपलब्धि थी?
    क. तंबाकू की खेती
    ख. प्रिटिंग प्रेस की शुरूआत
    ग. कार्टेल पर आधारित व्यापारिक व्यवस्था।
कूट :
    अ. केवल क और ख
    ब. केवल ख और ग
    स. केवल क और ग
    द. क, ख और ग

20. फ्राँसीसी व्यापारिक कंपनी की स्थापना किस फ्राँसीसी शासक के शासनकाल में हुई थी?
    क. लुई 14वां
    ख. लुई 16वां
    ग. नेपोलियन द्वितीय
    घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. ख	2. क	3. ग	4. स	5. ख	6. ग	7. ग	8. ख
9. द	10. क	11. ख	12. ग	13. घ	14. क	15. ख	16. ख
17. क	18. ख	19. क	20. क				

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org